ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 204-205
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

हिन्दी–सूफी–काव्य में मानव और प्रकृति का रागात्मक संबंध

डॉ0 मुहम्मद अख़लाक
हिन्दी विभाग
रामसहाय राजकीय महाविद्यालय, बैरी–शिवराजपुर, कानपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 08.05.2019, Revised- 13.05.2019, Accepted - 17.05.2019 E-mail: -aaryvart2013@gmail.com

सारांश : *मानव और प्रकृति का पुराना और अटूट सम्बन्ध रहा है। हमारे जीवन में प्रकृति इतनी घुली–मिली हैं, मानों वह हमेशा से ही जीवनांग बन कर आयी है। सामाजिक संगठन तथा उसके विकास और प्रकृति का मिश्रित इतिहास रहा है। यहाँ पर हम हिन्दी–सूफी–काव्य में अभिव्यक्त प्रकृति और मानवीय सम्बन्धों की विवेचना करेंगे। जिसे हम प्रमुख रूप से 6 भागों में बाँट सकते हैं।*

कुंजीभूत शब्द– जीवनांग, सामाजिक संगठन, मिश्रित इतिहास, हिन्दी–सूफी–काव्य, अभिव्यक्त, प्रकृति ।

अ– मानव और प्रकृति का अनुभूत्यात्मक संबंध।
ब– सहयोगी रूप में प्रकृति।
स– मानव की प्रकृति के प्रति प्रेम भावना।
द– प्रकृति और मानव का प्रेरक–प्रेरित सम्बन्ध।
य– प्रकृति मानव के अनुकूल या प्रतिकूल रूप में।
र– प्रकृति और मानव का उपभोग्य एवं उपभोक्ता सम्बन्ध।

अ– मानव और प्रकृति का अनुभूत्यात्मक संबंध – जब कोई कवि प्रकृति को मानवीय भावनाओं और अनुभूति संपन्न देखता है। उस स्थिति में प्रकृति और मानव का अनुभूत्यात्मक संबंध कहलाता है। प्रकृति के साथ इस सम्बन्ध का कारक मानव और प्रकृति का चिर साहचर्य और वासनात्मक प्रगाढ़ सम्बन्ध है। हिन्दी सूफी काव्य में प्रकृति के बड़े सुंदर अनुभूतिपरक चित्रण देखने को मिलते हैं। कासिमशाह के प्रेमाख्यानक काव्य 'हंस ज्वाहिर' में कथानायक हंस के जन्म पर शहर के नागरिक आनंद से भर गए। इस समय मानवेतर सृष्टि भी पीछे रहने वाली नहीं। धरती और आकाश आनंदमग्न होकर झूम उठे।

धनि वह रैन पुत्र की होई, धरती स्वर्ग हुलस सब कोई। मनुष्य अपनी मानसिक स्थिति के अनुसार ही प्रकृति को देखने लगता है। पद्मावत में रत्नसेन के आगमन की सूचना हीरामन तोते ने नायिका पद्मावती को पहुँचा दी है। खुशी से झूमती पद्मावती को बसन्त ऋतु की हरियाली सधवा प्रतीत हो रही है। प्रकृति ने भी पराग के रूप में अपनी माँग में सिंदूर भर रखा है।

सीस परासन्ह सेंदूर कीन्हाः। नवल सिंगार बनाफति कीन्हा।

ब– सहयोगी रूप में प्रकृति – विशाद और विरह से ग्रसित मनुष्य के लिए प्रकृति हमेशा से अति सहयक रूप में उपस्थित रही है। कवियों ने तोता, मैंना, हंस, कबूतर और पवन आदि के द्वारा प्रेम संदेश के आदान–प्रदान की अति प्राचीन परंपरा रही है। दुखदायी पलों में सहायक बनने के कारण ही उनके प्रति प्रेम भी उत्कृष्ट हो जाना स्वाभाविक है। हिन्दी सूफी काव्य में विरह के अन्तर्गत प्रकृति का सहयोगी रूप बड़ी मनोरमता से उभरा है। काव्य में हंस, भ्रमट, कबूतर, तोता, कोयल, कौआ और पवन ने विरही के मनोदशाओं को उसे प्रिय तक पहुँचाकर उसको हौसला दिया है। प्रेम संदेश पहुँचाने में हंस बड़े कुशल हैं। उस्मान के प्रेमाख्यान 'चित्रावली' में कौलावती के विरह से पसीजकर हंस उसके प्रेम संदेश को सुजान तक पहुंचाकर अपने सहयोगी होने के भाव को सिद्ध करता है।

पैज बांधि गौनौं वहि देसा। लै पहुंचावौं तोर सदेसा।।
औ जोगी कुअरहि लै आऊं। हंस मिसिर तो नाउं कहाऊं।।
सुनि के कौल पाउं लै परी। कहिसि थि अब जानि बिलंबहु धरी।।

स– मानव की प्रकृति के प्रति प्रेम भावना– पुश–पक्षियों को पालैन, उनको चारा–पानी देने, वृक्षारोपण करने जैसा मानवीय अभिरूचियों में मानव की प्रकृति के प्रति प्रेम भावना अभिव्यक्त होती है। पालतू पशु– पक्षियों को दुर्घटनावश अथवा स्वाभाविक मौत हो जाने, उनके क्रय–विक्रय पर मानव मन में खिन्नता और अवसाद का भाव जाग उठता है। जिसका कारण यह है कि हम अपने हाथों पाले–पोसे पक्षियों, पशुओं का विलगाव बर्दाश्त नहीं कर पाते। नूर मुहम्मद रचित हिन्दीं प्रेमाख्यान 'अनुराग बांसुरी' में योगी ने असुर को अपना पालतू तोता दे दिया लेकिन उसका पालतू तोते के प्रति असीम प्रेम छिप ना सका, मिट न सका–

महापीर मोहिं सुवा–वियोगू। नासत राह बचन सों रोगू।।

जीवन में मनुष्य कभी–कभी आत्मघुटन का अनुभव करने लगता है। तब प्रकृति अपनी विविध छवियों से उसे

साथी बनाकर हिम्मत देने का काम करती है। 'हंस जवाहिर' प्रेमाख्यान का नायक हंस तीन साल तक कारागृह में रहा। अंत में एक दिन वह अपनी माँ से बगीचा घूमने की इजाजत मांगता है। यह हम प्रकृति के मानवीय प्रेम की अभिव्यक्ति देखते हैं :

कहा भाय मैं बाहर जाऊं। क्षण यक बाग देखि फिर आऊं।

द– प्रकृति और मानव का प्रेरक–प्रेरित सम्बन्ध – प्राकृतिक उपादान सदैव से ही मानव जीवन की सुख–दुख भरी स्थितियों के प्रेरणा रहें हैं। क्षण–क्षण में बनते बिड़ते बादल मनुष्य को सांसारिक अस्थिरता का संकेत देते हैं। मलिक मुहम्मद जायसी कहते है :–

यह संसार झूठ थिर नाहीं। उठहिं मेघ जेउं जाइ बिलाहीं।

य– प्रकृति मानव के अनुकूल या प्रतिकूल रूप में– प्रकृतिक उपादान पहाड़, जंगल, नदी, मैदान और उनकी विविध क्रियाएं जैसे आँधी, वर्षा, पाला, धूप, प्राकृतिक नियमों में बद्ध है। जब प्रकृति का व्यापार और क्रियाएँ मनुष्य जाति के अनुरूप व्यवहार करती हैं, तो हमें सुखानुभूति होती है यदि यही प्रकृति की क्रियाएं और व्यवहार हमारे प्रतिकूल होती हैं तो हमें दुख, पीड़ा, बाधा और संकट होता है।

पेड़–पौधे छिपने हेतु बड़े अच्छे साधन रहे हैं। राक्षस को देखते ही मंभानकृत मधु मालती नायिका की प्रेमा और उसकी सहेलियाँ पेड़ो में जा छिपती हैं। यहां प्रेमा और उसकी सखियों को अपनी ओट में छिपा लेने की प्रकृति की प्रवृत्ति और व्यावहार मनुष्य के अनुरूप सिद्ध हुए हैं। उनके जीवन रक्षक बन कर खड़े हैं, जिससे हमें सुख की अनुभूति होती है :–

तेहि देखे मन संका आई। हम रूखन तर रही छिपाई।।

र– प्रकृति और मानव का उपभोग्य एवं उपभोक्ता सम्बन्ध – प्रकृत्ति सदैव से ही मानव के लिए उपभोग्य वस्तुओं को पैदा करती रही है। मानव इन पदार्थों, फलों, फूलों, पत्तों, बीजों, पानी और हवा आदि का विविध रूपों में सदा उपभोग करता रहा है। कहना तो यह चाहिए कि भोजन के लिए मानुसजात प्रकृति पर ही निर्भर है। इसके अतिरिक्त वस्त्र, गृह निर्माण, यातायत, औजार, सजावट आदि की एक–एक जरूरत प्रकृति से ही पूरी होती है। प्रकृति का मानव जीवन और मानव सभ्यता में इतना गहरा संबन्ध रहा है, कित बिना प्रकृति के मनुष्य, मनुष्य बनकर जी नहीं सकता। सूफी कवियों ने विविधि भोज्य पदार्थों का वर्णन विवाह, जन्मोत्सव आदि के प्रकरणें में दिए गए भोज–आयोजनों में विस्तुत और गौरवपूर्ण ढंग से किया है। इसका वर्णन प्रेमाख्यान 'चित्रावली' में चित्रावली और सुजान के विवाह–अवसर पर मूंग, चना आदि से बने पकवान, कई प्रकार के अचार और मिष्ठान मेहमानों को खिलाए गए–

मूंग, चना थै बहु परकारा। लेत न बनै नाउं विस्तारा।।

'मानव मन सौंदर्य प्रेमी है। वह अपने रूप को और भी सौंदर्यमयी देखने का इच्छुक रहता है। इसी कारण वह विविध प्रकार साज़ श्रृँगार करता रहा है। यह प्रकृति ही हमारे लिए श्रृँगार के प्रसाधनों, जैसे सुगंध, पुष्प, रंग प्रदान करती है। जुलेखा संयोग के सुखद अवसर पर अपना श्रृंगार इत्र, मेहदी, फूल, हीरा, मोती, सुगंधित तेल और प्राकृतिक पदार्थों से करती है।9

इसी प्रकार 'पद्मावत' में गन्धर्वसेन योगियों, रत्नसेन आदि पर आक्रमण हाथियों की सहायता से करता है –

बाइस सहज सिंधली चाले, गिरि पहार पब्बे सब हाले।।

हम देखते है कि पेड़–पौधों की शीतल छाया खासकर गर्मियों में बड़ी सुखदायी होती है। गड़रिया के बंधन से छुटारा पाकर 'मृगावती' का कुंभर इन्हीं वृक्षों की शीतल छाया में सुकून पाता है :

तरवर एक सोहावन देखसि, कह बैठी खन छांह।
दांह बैठ तरवर की, पौन झुरकै पुनि तांह।।

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी सूफी काव्य में प्रकृति मानवीय उद्गारों और संवेदनाओं की सफल अभिव्यक्ति के सहायक सिद्ध हुई। प्रकृति के आश्रय से ही सूफी काव्य के भाव पक्ष को विस्तृत विस्तार मिला है। साथ ही इसमें मानव और प्रकृति के संबंधों के विविध पक्ष बड़ी शिद्दत से उभरे हैं। हिन्दी सूफी काव्य में भाव पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति तथा मानव व प्रकृति के पारस्परिक रागात्मक संबन्धों की नज़र से हिन्दी सूफी काव्य कुंदन जैसा चमक उठा हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हंस जवाहिर / कासिमशाह / पृष्ठ–11
2. पद्मावत / मलिक मुहम्मद जायसी / पृष्ठ–175
3. चित्रावली / उसमान / पृष्ठ–209
4. अनुराग बांसुरी / नूर मुहम्मद / पृष्ठ–117
5. हंस जवाहिर / कासिमशाह / पृष्ठ–16
6. जायसी ग्रंथावली / अखरावत / मालिक मुहम्मद जायसी / पृष्ठ–318
7. मधुमालिती / मंझन / पृष्ठ–64
8. चित्रावली / उसमान / पृष्ठ–199
9. हिन्दी प्रेमगाथा काव्य संगृह (युसूफ–जुलेखा) / पृष्ठ–397
10. पद्मावत / मलिक मुहम्मद वायस / पृष्ठ–231
11. कुतबन / मृगावती / पृष्ठ–115

*****